किसने दी है शेयर बाजार को पटखनी?

शेयर बाजार इस समय धाराशाई है और निवेशकों के पसीने छूट रहे हैं। हर दिन बाजार टूट रहा है और नए रेकॉर्ड बन रहे हैं। ऐसे में लोग यह सवाल पूछ रहे हैं कि उस समय जबकि देश में कोरोना का कहर था तो बाजार उछल रहा था जबकि अब कोरोना की लहर ठहर गई है, बाजार है कि फिसला जा रहा है। यह भी कहा जा रहा है कि इसके पीछे इंटरनैशनल सटोरियों का हाथ है जो लगातार बिकवाली कर रहे हैं। इन्हें हिडन प्लेयर भी कहा जाता है। ये छिपकर खेलते हैं और मोटा मुनाफा कमाकर छूमंतर हो जाते हैं। ऐसे ही हिडन प्लेयर्स के बारे में बता रहे हैं मधुरेन्द्र सिन्हा

शेयर मार्केट में छिपकर खेलकर मोटा पैसा बनाने वाले सटोरिए होते हैं या फिर इनसाइडर ट्रेडिंग करने वाले लोग। इन्हें चाहे कुछ भी नाम दे दें। इनका मकसद एक ही होता है, ढेरों पैसे तुरंत कमाना, मालामाल हो जाना और छूमंतर हो जाना। उनके लिए मोरल्टी या नैतिकता जैसी कोई चीज नहीं होती। ऐसे खिलाड़ी सारी दुनिया में हैं और कई बार ये शेयर बाजारों में तेजी का तूफान लाते हैं या फिर मंदी का दौर। ये लोग अपने तरीके से बाजार की चाल तक को प्रभावित करते हैं जिसे मैन्युपुलेशन कहा जाता है। हाल में अपने शेयर बाजार में भी कुछ इसी तरह से देखने को मिल रहा है। इन दिनों सेंसेक्स लगभग अपने पिछले साल के स्तर पर आ गया है। 14 मई 2021 को सेंसेक्स 48732.55 पर बंद हुआ था। वहीं इस साल 13 मई यानी शुक्रवार को सेंसेक्स 52,793.62 पर बंद हुआ।

दो लॉबी करती हैं खेल

शेयर मार्केट में दो तरह की लॉबी होती हैं। पहली बुल्स, जिसे तेजड़िये भी कहा जाता है और दूसरी, बेयर जिसे मंदेड़िये कहा जाता है। नाम के अनुरूप ही ये काम करती हैं। बुल्स बाजार में तेजी लाकर अपना मुनाफा काटते हैं और फिर छूमंतर हो जाते हैं। लेकिन दिलचस्प बात यह है कि बेयर भी शेयरों को गिराकर बाद में उससे ही मुनाफा कमा लेते हैं। इसका तरीका सीधा सादा है कि किसी कंपनी के शेयरों की मिलकर हैमरिंग की जाती है और वह गिरता जाता है। जब वह काफी गिर चुका होता है तो फिर उसमें वे खरीदारी कर लेते हैं। इससे और भी लोग उस कंपनी के शेयरों को खरीदने लगते हैं। जब शेयर का भाव बढ़ जाता है तो बेयर उन्हें बेचकर निकल जाते हैं।

पंप ऐंड डंप

शेयर बाजारों के सटोरिये इसी सिद्धांत पर खास-खास शेयरों के दाम बढ़ाते हैं। पहले वे उन शेयरों में पैसा लगाते हैं जिनके बारे में उनके पास पूरी सूचना होती है या फिर उसके प्रमोटर उनसे मिले हुए होते हैं। वे सभी या फिर कुछ और खिलाड़ी मिलकर उस शेयर की जबर्दस्त खरीदारी करते हैं और फिर उसकी कीमतें बढ़ाते जाते हैं। जब उनका टार्गेट पूरा होने लगता है तो वह एक-एक कर अपने शेयर बेच देते हैं। इससे उस कंपनी के शेयर धराशायी हो जाते हैं और भोले-भाले निवेशकों के पैसे डूब जाते हैं। अमेरिका में यह काफी प्रचलित है और इसमें काफी बड़ी तादाद में लोग ठगे भी जाते हैं। सोशल मीडिया के फैल जाने से अब निवेशकों तक पहुंचना आसान हो गया है।

पंप ऐंड डंप का एक बड़ा मामला पिछले साल अमेरिका में हुआ जब विडियो गेम रिटेलर कंपनी गेमस्टॉप नाम की कंपनी के शेयर तेजी से बढ़ने लगे। इसके पीछे एक सटोरिये कीथ जिल का हाथ था जिसने सोशल मीडिया रेडइट के जरिए इसे खूब पब्लिसिटी दी। कीथ जिल और उसके ग्रुप के लोग लाखों डॉलर कमाकर शेयर बाजार से फौरन निकल गए। हालत यह थी कि एलन मस्क तक ने इसमें पैसे निवेश कर दिए थे। पंप ऐंड डंप की उस घटना ने अमेरिका में तहलका मचाया और सरकारी तंत्र को भी इसकी जांच करनी पड़ी। जिल पर निवेशकों के पैसे लुटवाने का आरोप अदालत में लगा। हालांकि विदेशी सटोरिये अभी भी सक्रिय हैं।

कई धनी कारोबारी शामिल

■ दुनिया के कई नामी-गिरामी धनी कारोबारी शेयर बाजारों में तेजी और मंदी का दौर लाते रहते हैं। इनमें कई फर्में काम कर रही हैं जिसमें पॉल ट्यूडर की कंपनी ट्यूडर इंवेस्टमेंट कॉर्पोरेशन और ब्लैक रॉक भी हैं। ट्यूडर ने न्यूयॉर्क कॉटन फ्यूचर्स में सट्टेबाजी से बहुत पैसा कमाया और बाद में वह इंवेस्टमेंट के फील्ड में चले गए जहां उनकी कंपनी 11 अरब डॉलर के एसेट मैनेज करती है।

■ ब्लैक रॉक एक ऐसी इंवेस्टमेंट कंपनी है जो सारी दुनिया में एसेट मैनेज करती है और उसके पास 10 खरब डॉलर के एसेट मैनेजमेंट के तहत हैं। इन कंपनियों की ताकत इतनी है कि वे जिस कंपनी के शेयरों को छू देती हैं उनके वारे न्यारे हो जाते हैं। ब्लैक रॉक के पास ऐपल, माइक्रोसॉफ्ट, वेल्स फार्गो, मोरगन चेज जैसी ग्लोबल कंपनियों के शेयर बड़े पैमाने में हैं। इनके बारे में कई बार बातें उठती हैं लेकिन फिर दब भी जाती हैं।

इनसाइडर ट्रेडिंग

इसमें शेयर इन्वेस्टर और प्रमोटर या कंपनी का कोई महत्वपूर्ण व्यक्ति आपस में मिल जाते हैं। इनसाइडर ट्रेडिंग करने वाला या तो इन्वेस्टर होता है या फिर शेयर बाजार का कोई खिलाड़ी। वह कंपनी की अंदरूनी गोपनीय सूचनाएं जैसे कंपनी की आगे की क्या बिजनेस प्लानिंग है, कंपनी क्या करने जा रही है, उसकी आर्थिक ताकत कितनी है, उसके पास धन जुटाने के क्या साधन हैं, क्या वह किसी बड़ी कंपनी से करार करने जा रही है, वगैरह-वगैरह कंपनी के पास प्रमोटर या किसी डायरेक्टर वगैरह से पा लेता है और फिर सिस्टमेटिक तरीके से उसके शेयर खरीदने लगता है। एक योजनाबद्ध तरीके से शेयर खरीदने से किसी का ध्यान सहसा उसकी ओर नहीं जाता है। प्रमोटर और ब्रोकर का यह खेल एक सीमा तक चलता है जब तक उस कंपनी के शेयर एक खास स्तर तक नहीं पहुंच जाते। उसके बाद वह ट्रेडर शेयर बेचना शुरू कर देता है।

2018 में हैथवे और डेन केबल नेटवर्क्स का मामला सामने आया जिसमें उनके शेयर बाजार में भारी गिरावट के बावजूद तेजी से बढ़े। थोड़े दिनों बाद जब रिलायंस ने उनके अधिग्रहण की घोषणा की तो बात साफ हो गई कि इसमें इनसाइडर ट्रेडिंग हुई है। इसी तरह 2013 में इंफोसिस के शेयर बाजार में भारी गिरावट के बावजूद और उसके शेयर सीमा से ज्यादा बढ़ गए। इसी तरह सन फार्मा के शेयर सिर्फ छह दिनों में 34 फीसदी बढ़ गए थे। इसी तरह 2015 में सेंचुरी टेक्सटाइल्स का मामला सामने आया जिसमें कैमडेन इंडस्ट्री ने एक सौदे से 214 करोड़ रुपये कमा लिए थे।

भारत में नहीं है सख्त कानून

इनसाइडर ट्रेडिंग अमेरिका और यूरोप में बहुत बड़ा अपराध है और इसमें कड़ी सजा का भी प्रावधान है। वहीं अगर भारत की बात करें तो यहां कानून तो है लेकिन वह उतना सख्त नहीं है और उसके अलावा कानूनी प्रक्रिया बहुत लंबी भी है। सेबी इसके खिलाफ अक्सर कदम उठाती रहती है और ट्रेडर्स को बैन करने तथा उन पर जुर्माना लगाने का भी काम करती है। इस तरह से कई ब्रोकरों और उनकी फर्में कानून के पंजे में आ चुकी हैं। कइयों पर तो शेयर बाजार में भाग लेने पर भी रोक लगती रहती है लेकिन उसके बावजूद कई खेल भी जाते हैं। इस तरह के कई आरोप कई कंपनियों पर लगे हैं। सेबी ने कई मामलों में जांच भी की है लेकिन कोई बड़ा ऐक्शन नहीं हुआ।

सोशल मीडिया

अब सट्टेबाजी, चाहे वह कमोडिटीज में हो या स्टॉक्स में, ज्यादातर फ्यूचर्स यानी वायदा कारोबार में सीमित हो गई है। इसमें सट्टा खेलने वाले प्रमोटरों से मिलकर या कई बार बिना मिले फ्यूचर में शेयरों की कीमतें बढ़ा देते हैं। इसके लिए वह मीडिया पब्लिसिटी का सहारा लेते हैं। सही समय देखकर मुनाफा काट लेते हैं। हाल में देश में खाद्य तेलों की कीमतें बढ़ने का एक बड़ा कारण भी यही था। सटोरियों ने सरसों दाने पर खूब सट्टा लगाकर उसके भाव ऊंचाइयों पर पहुंचा दिए जिससे रेडी प्रॉडक्ट की कीमतें बेहद ऊंची हो गईं। इन दिनों सोशल मीडिया भी इसका एक टूल बना हुआ है और कई यूट्यूब चैनल वगैरह किसी खास शेयर को प्रमोट करते नजर आते हैं। ऐसे में शेयर खरीदते समय इन बातों का ध्यान रखें:

■ खास कंपनियों के पिछले कुछ वर्षों की आमदनी व शेयरों की कीमतों को ध्यान से देखने पर जान जाएंगे कि क्या खेल चल रहा है।

■ सोशल मीडिया पब्लिसिटी या किसी और के कहने पर तो कतई न जाएं।

■ कंपनी की तीन साल का बैलेंस शीट और शेयर प्राइस काफी कुछ बता देती है।

ऑनलाइन से बढ़ी पारदर्शिता

ऑनलाइन ट्रेडिंग ने शेयर बाजार की पारदर्शिता काफी बढ़ा दी है। अब हर दिन बिके और खरीदे गए शेयरों का हिसाब-किताब रखा जाता है। लेकिन खेलने वाले फिर भी सफाई से खेल ही जाते हैं। फिर भी आज के कई बड़े निवेशकों पर उंगली उठती है कि अपने समय में उन लोगों ने इनसाइडर ट्रेडिंग जमकर की और अरबपति बन गए। अगर आप उनकी जीवनी ध्यान से देखेंगे तो पाएंगे कि उनकी दौलत में बेशुमार इजाफा 80 और 90 के दशक में ही हुआ जब शेयर बाजार में पारदर्शिता नहीं थी और बदला जैसे टूल इस्तेमाल होते थे। इसके जरिए वे थोड़े से पैसे देकर अपने खरीदे हुए शेयरों को लंबे समय तक पास रखे रहते थे और जब वे बढ़ते तो ऊंची कीमतों पर बेच देते। लेकिन आज ऑनलाइन के जमाने में यह संभव नहीं है।

क्रिप्टो करंसी का भी असर

शेयर बाजार में गिरावट के कारण कई हैं। इन दिनों फॉरेन इंस्टिट्यूशनल इनवेस्टर लगातार इंडिया की मार्केट में हजारों करोड़ के शेयर बेच रहे हैं। वहीं क्रिप्टो करंसी की मार्केट इन दिनों धराशायी है। क्रिप्टो करंसी के इनवेस्टर्स शेयर मार्केट में भी पैसा लगाते हैं। इनकी वेल्थ काफी कम हो गई है जिसका असर टोटल इन्वेस्टमेंट फंड्स और लिक्विडिटी पर पड़ा है। शेयर मार्केट गिरने पर रिटेल इनवेस्टर इनसाइडर ट्रेडिंग के ऊपर इल्जाम लगाते हैं जबकि गलती उनकी अपनी होती है।

*- **अश्विनी गोयल,** फाउंडर, नैम सिक्योरिटीज लि.*

मुनाफे में सबका हिस्सा

इनसाइडर ट्रेडिंग में सटोरिए किसी कंपनी के प्रमोटर या टॉप मैनेजमेंट से खास तरह की सूचना लेकर उसके शेयर खरीदवाते हैं। जब रिजल्ट आता है तो शेयर उछल जाते हैं। मुनाफे में सबका हिस्सा हो जाता है। समय-समय पर कंपनियों, फर्मों और लोगों पर कार्रवाई हुई है।

- **प्रणव हल्दिया,** *एमडी, प्राइम डेटाबेस*

सेबी हो जाती है अलर्ट

अब सेबी का सर्विलैंस मेकेनिज्म बहुत ज्यादा है। जब भी किसी कंपनी के शेयरों में असामान्य खरीदारी होती है तो सेबी तुरंत अलर्ट हो जाती है। हो सकता है कि कोई ऐक्शन भी हो। सोशल मीडिया पर काफी कुछ आता रहता है, जिससे ग्राहकों को जानकारी मिलती रहती है। कुछ गड़बड़ होने पर शोर मच जाता है।

- **संजय सिन्हा,** *संस्थापक, साइट्रस ऐडवाइजर्स*

खेलने वाले खेल जाते हैं

अब चीजें काफी बदल गई हैं। पहले जैसी बात नहीं रही। अब लोगों के खिलाफ तुरंत कार्रवाई होती है। सेबी की वेबसाइट पर ऐसे लोगों के नाम देखे जा सकते हैं। लेकिन इस खेल में लालच बहुत है और खेलने वाले तो खेल जाते हैं।

- **संजय,** *शेयर मार्केट एनालिस्ट*